मध्यप्रदेश के शैलचित्र

सिद्धांत, विश्लेषण, प्राविधि

स्व. डॉ. श्याम कुमार पाण्डेय
डॉ. उर्मिला प्रकाश मिश्रा
डॉ. निर्मला पाण्डेय

Scanned with OKEN Scanner

पर्वत श्रृंखलाओं में प्राप्त शैलगृहों या शिलाखण्डों पर रंगों या किसी उपकरण के माध्यम से उकेरे गए चित्रों को सामान्य शब्दों में शैलचित्र कहा जाता है। प्रारम्भिक रूप से यह चित्र बच्चों द्वारा बनाए गए चित्रों से समानता रखते हैं जिनमें यथार्थपरकता के स्थान पर संकेतों का सहारा अधिक लिया जाता है। इन चित्रों में अवयवों का प्रदर्शन नहीं होता है। शैल चित्रों की परिभाषा करना अत्यन्त कठिन कार्य है लेकिन इनमें अपने समय का इतिहास और मनुष्य की विकास-यात्रा जीवन्त ढंग से दर्ज है। मध्यप्रदेश के तमाम पुरातात्विक महत्व के स्थलों पर प्रागैतिहासिक काल के शैलचित्र गुफाओं में दर्ज हैं।

डॉ. श्याम कुमार पाण्डेय ने प्रस्तुत पुस्तक में मध्यप्रदेश के ऐसे ही ऐतिहासिक महत्व के शैलचित्रों की खोज करके उसमें दर्ज इतिहास को सामने लाने का भगीरथ प्रयास किया है। इस अध्ययन मार्ग में डॉ. पाण्डेय के समक्ष संसाधनों की कमी और अन्य प्रकार की चुनौतियाँ रहीं लेकिन भारतीय पुरातत्व, इतिहास एवं संस्कृति में गहरी दिलचस्पी ने उनके कदम को रुकने नहीं दिया। उन्होंने तत्कालीन पुरातत्वविदों के साथ मिलकर तो सर्वेक्षण कार्य किया ही बाद में अकेले ही मध्यक्षेत्र के शैलचित्रों पर कई वर्षों तक सघन अन्वेषण एवं अध्ययन के पश्चात् पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की और इस विषय के पहले रिसर्च स्कॉलर बने। डॉ. पाण्डेय ने मध्यक्षेत्र के जंगलों एवं पर्वतों में घूम-घूम कर प्राप्त शैलचित्रों का अध्ययन-विश्लेषण कर प्रागैतिहासिक मानव के प्रारंभिक जीवन से लेकर उनके सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन की सटीक व्याख्या की।

डॉ. पाण्डेय ने 1993 में 'इंडियन रॉक आर्ट' शीर्षक से अंग्रेजी भाषा में अपनी पुस्तक प्रकाशित कराई। यह पुस्तक इतिहासकारों, पुरातत्वविदों के बीच चर्चा में रही। हिन्दी भाषियों के बीच इन तथ्यों को लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से डॉ. पाण्डेय ने हिन्दी में शैलचित्रों पर कार्य प्रारम्भ किया। नौ अध्यायाओं का लेखन कार्य पूर्ण हो चुका था लेकिन क्रूर काल के प्रभाव से अचानक उनका स्वर्गवास हो गया और पुस्तक लेखन का कार्य अधूरा छूट गया। इस अधूरे छूटे कार्य को पूरा करने का बीड़ा डॉ. पाण्डेय की बहन डॉ. उर्मिला प्रकाश मिश्रा ने उठाया। डॉ. उर्मिला ने डॉ. पाण्डेय की स्मृति और उनके साथ भ्रमण किए गए शैलाश्रयों को प्रेरणा का संबल बनाकर अधूरे कार्य को पूरा किया। शैलचित्रों में दिलचस्पी रखने वालों के लिए यह पुस्तक मील का पत्थर सिद्ध होगी। पुस्तक मध्यप्रदेश के शैलचित्रों में दर्ज इतिहास को समझने की नवीन दृष्टि प्रदान करने में इसलिए भी समर्थ है क्योंकि इसमें शैल चित्रों में उकेरे गए जीवन के सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक पहलूओं को रंगीन और श्वेत-श्याम चित्रों के माध्यम से फलक विवरण के साथ प्रस्तुत किया गया है।

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

ISBN: 978-93-85543-09-8

© डॉ. उर्मिला प्रकाश मिश्रा

मूल्य : 850/-

प्रथम संस्करण : 2018

प्रकाशक : लीशा प्रकाशन

4596/1-ए, निकट टाइम्स ऑफ इंडिया बिल्डिंग

11- दरियागंज, नई दिल्ली-110002

Leeshaprakashan2003@yahoo.com

कम्प्यूटरीकृत : चेतन ग्राफिक्स, दिल्ली-110031

मुद्रक : अकबर प्रिंटर्स, नई दिल्ली-110002

आवरण : चेतन डिजाइनर

Madhyapradesh Ke Shail Chitra (History)

By Dr. Urmila Prakash Mishra

Rs. 850/-

फलक-5 पशु चित्रों का विकास
संख्या 1-12 उच्चपुरापाषाण काल
संख्या 17-32 मध्यपाषाण काल- I

फलक-6 पशु चित्रों का विकास
संख्या 1-16 मध्यपाषाण काल- II
संख्या 17-32 नवपाषाण-ताम्रपाषाण काल

फलक-7 उच्चपुरापाषाण एवं मध्यपाषाण काल, अध्यारोपित, लाड़ीबाई

फलक-8 मध्यपाषाण काल के सामूहिक क्रियाकलाप
(a) नदी पार करना, मध्यपाषाण- II, लाड़ी बाई
(b) भोजन एकत्रित करना, मध्यपाषाण- II, जावरा
(c) ओजस्वी नर्तक, मध्यपाषाण- I, चील दांत
(d) ओजस्वी नृत्य, मध्यपाषाण- I, जावरा

फलक-9 मध्यपाषाणकालीन समूह क्रियाकलाप
(a) अध्यारोपित, मध्यपाषाण- I, खरवई
(b) भोजन एकत्रित करती स्त्रियां, मध्यपाषाण- I, आवचंद

फलक-10 मध्यपाषाण काल I
(a) जटिल नमूने, मनुआभांड की टेकरी
(b) शिकारी, मनुआभांड की टेकरी
(c) ओजस्वी नर्तक, मनुआभांड की टेकरी
(d) समूह क्रियाकलाप मनुआभांड की टेकरी

फलक-11 एक्स-रे चित्रकारी चीलदांत

फलक-12 (a) समूह, नृत्य, मध्यपाषाण- II, **कठोतिया**
(b) एक्स-रे, शिकार दृश्य, मध्यपाषाण- II, भीमबैठका

फलक-13 (a) नवपाषाण-ताम्रपाषाण काल समूह क्रियाकलाप, खरवई
(b) स्फूर्त आकृतियां, जावरा

फलक-14 मध्यपाषाण कालीन समूह क्रियाकलाप, लाड़ी की करार

फलक-15 नग्न आकृतियां
(a) चतुरभुज नाथ
(b) जावरा
(c) भीमबैठका

Scanned with OKEN Scanner

(d) श्यामला हिल्स

(e) कठोतिया

प्रतीक चिन्ह फलक

फलक संख्या 1

1.	गणेश भीम बैठका, रायसेन
2.	दुर्गा
3-6.	कार्तिकेय, खरवई
7.	शिवलिंग पुजारी, खरवई
8.	शिवलिंग
9.	गिलगमेश, पचमढ़ी
10.	एक देव
11.	यक्ष, भीमबैठका
12.	जादुई आकाश, रथ, पचमढ़ी

फलक संख्या 2

1-6	दानव आकृतियां, पचमढ़ी
7.	कच्छप देव, भीमबैठका

फलक संख्या 3

1.	पक्षियों सहित वृक्ष, भीमबैठका
2-5, 7,9, 10.	वृक्ष आकृतियां एवं पुजारी, खरवई
6.	वृक्ष आकृतियां, आबचंद
8-11.	वृक्ष-पूजक, पचमढ़ी
12.	कल्प वृक्ष, खरवई
13.	लतापत्र, भीमबैठका
14.	प्रजनन, आबचंद
15.	वनदेवता, आदमगढ़

फलक संख्या 4

(a) 1-12	स्वस्तिक चिन्ह
(b) 1-7.	सूर्य प्रतीक चिन्ह
8-14.	प्रतीक चिन्हों का समूह, भीमबैठका
15.	हाथ के पंजों की छाप, सागर

Scanned with OKEN Scanner

डॉ. उर्मिला प्रकाश मिश्रा

डॉ. उर्मिला प्रकाश मिश्रा का जन्म 3 मार्च, 1941 को छत्तीसगढ़, बिलासपुर में हुआ। इन्होंने स्कूल की शिक्षा बिलासपुर में प्राप्त की तथा डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय (मध्यप्रदेश) से 'प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व' विषय में स्नातकोत्तर एवं पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। इनके निर्देशन में कई शोधार्थियों ने पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। बचपन से ही प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति के प्रति सम्मान के परिणाम स्वरूप लेखन कार्य में रुचि रही। आपकी निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

- प्राचीन भारत में नारी
- भारत का इतिहास (आधुनिक भारत)
- स्वातंत्र्य समिधा
- भारत के लोक जीवन में लोक कल्याण की परंपरा

राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक शोध संगोष्ठियों में शोध पत्रों का वाचन एवं प्रकाशन हुआ एवं महत्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाओं में आपके लेख प्रकाशित हुए हैं। महारानी लक्ष्मीबाई स्वशासी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भोपाल (म.प्र.) में इतिहास विभाग की विभागाध्यक्ष के रूप में कई राष्ट्रीय संगोष्ठियों का सफल आयोजन भी किया है। 'इंडियन रॉक आर्ट सोसायटी' के सदस्य के रूप में इन्होंने डॉ. श्याम कुमार पाण्डेय के साथ मध्यप्रदेश के विभिन्न शैलाश्रयों का भ्रमण किया है जिसके परिणाम स्वरूप पूरक लेखिका के रूप में यह पुस्तक आपके समक्ष प्रस्तुत है।

संप्रति : शासकीय सेवानिवृत्ति के पश्चात् भी लेखन कार्य निरंतर जारी है।

पता : डॉ. उर्मिला प्रकाश मिश्रा
सी/38, नेहरू नगर
कोटरा सुल्तानाबाद
भोपाल- 462003 (म.प्र.)

ISBN-978-93-85543-09-8
9 789385 543098

लीशा प्रकाशन

Scanned with OKEN Scanner